भिक्षावृत्ति एक सामाजिक समस्या

(बिलासपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

✧ **डॉ. अभिजीत भौमिक**

भिक्षावृत्ति आज समाज में एक ऐसी समस्या बनती जा रही है जो हर प्रातः लोगों के द्वार में दस्तक देकर उन्हें यह बताते है कि मानो समाज का एक दूसरा पहलू भी हैं जो कि भूखा, कमजोर, उदास व बिमार है। जिन्हें उनके सहारे व सहयोग की दरकार है। पर विडम्बना यह है कि जिस समाज में 20 लाख व्यक्ति हाथ फैलाये अगर आपके पास खड़े है तो आप किस–किसकी व कितनी सहायता कर सकते है और यदि की भी तो क्या इसका लाभ उनको छड़िक मिला या दीर्घकालीन। अगर समाज का एक तबका विकास कार्य से कट बोझ बन जाये तो उस जनसंख्या व समाज का विकास अवरूद्ध ही रहता है।

आज भारत जैसे विकासशील देश में जहां दोनों हाथों से काम करने के बाद भी हमें विदेशों से आनाज व अन्य आवश्यक सामाग्री क्रय करनी पड़ रही हो वहां इतनी बड़ी संख्या में लोग अगर मंदिरों के चौखट में सड़कों पर या घरों के द्वार में अपनी उर्जा बर्बाद कर दे तो हम विकसित देशों का मुकाबला कब कर पायेगे। आवश्यक है एक सार्थक व योजना व सकरात्मक प्रयास का जो कि देश की इस तस्वीर को बदल कर नये रूप में सामने लाये।

इसी आशा से शोधकर्ता ने बिलासपुर नगर में बढ़ रहे भिझावृत्ति के कार्य को एक सामाजिक समस्या के रूप में समझा और यह जानने का प्रयास किया कि क्यों लोग भिक्षावृत्ति का कार्य करते है तथा इस हेतु सरकार की योजना व प्रयास क्या–क्या है।

fof/k %&बिलासपुर नगर की कुल जनसख्या 2,93,000 है में शोधकर्ता ने 50 के समूह में भिक्षावृत्ति में संलग्न लोगों पर अध्ययन कर प्रश्नावलीयों, साक्षात्कार तथा अवलोकन कर विभिन्न आंकड़ें एकत्रित किये तत्पश्चात् ही विश्लेषण कर निम्न परिणाम प्राप्त हुये।

rkfydk@xkQ Øekd &1

fyx@/keZ d vk/kkj ij oxhZdj.k

ifr'kr

Øekd	fyx	/keZ	fyx	/keZ
1.	पुरूष	हिन्दू	68	42
2.	स्त्रियाँ	मुस्लिम	32	32
3.	–	अन्य	–	26

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि भिक्षावृत्ति में लिप्त 68 प्रतिशत भिक्षु पुरूष है तो वही पर 42 प्रतिशत भिक्षु हिन्दू धर्म को मानने वाले मतवलम्बी है। 32 प्रतिशत मुस्लिम धर्म से संबंधित है, किन्तु वही 26 प्रतिशत भिक्षु इसाई, जैन, बौद्ध अथवा पारसी है।

rkfydk@xkQ Øekd & 2

fHk{kq d oxhZdj.k d vk/kkj ij oxhZdj.k

Øekd	oxhZdj.k	ifr'kr
1.	परम्परागत	41
2.	अपाहित	08
3.	मजदूर	26
4.	कामचोर	25

भिक्षु के वर्गीकरण के आधार पर प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 41 प्रतिशत भिक्षु अपने परम्परागत पारिवारिक आचरण के कारण ही भिखारी का कार्य करते है तो व 8 प्रतिशत इसलिये भिक्षा मागते है कि वे अपाहिज है और कार्य करने में असमर्थ है। 26 प्रतिशत भिक्षु यह कार्य कर आय प्राप्त करने का एक मात्र रास्ता मानते है तो 25 प्रतिशत भिक्षु से यह ज्ञात हुआ कि वे आलसी या कामचोर है, इसलिये किसी मेहनतकस कार्य की जगह इसे ही पेट भरने का साधन मानते है।

---

ikpk;] yky cgknqj 'kkL=h egkfo|ky;] cykSnk] ftyk& tkatxhj&pkaik ¼N-x-½

rkfydk@xkQ Øekd & 3
dkj.k d vk/kkj ij oxhZdj.k

Øekd	dkj.k	ifr'kr
1.	अनुवांशिकता	41
2.	दरिद्रता	31
3.	शारीरिक कारण	08
4.	प्राकृतिक	04
5.	बेकारी	10
6.	पारिवारिक कारण	06

उपरोक्त तालिका में विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 41 प्रतिशत भिक्षु पारिवारिक व अनुवांशिक कार्यो के कारण ही परम्परागत कार्य के रूप में उक्त कार्य को करते आये है। 31 प्रतिशत भिक्षु अपनी दरिद्रता के कारण इस कार्य को करते है। 8 प्रतिशत भिक्षु शारीरिक अपंगता के कारण मजबूरी में भीख मांगते है। जबकि 04 प्रतिशत भिक्षु प्राकृतिक आपदा बाढ़ सूखा भू–कम्प से प्रभावित होकर गरीब हो गये और भीख मांग रहे है वही पर 10 प्रतिशत भिक्षु कोई रोजगार के आसान साधन उपलब्ध न हो पाने की एवज में भीख मांगकर पेट पालते है। जबकि 06 प्रतिशत भिक्षु अपने परिवार में बिखराब व आर्थिक रूप से असंक्षमता के कारण भीख मागते है।

rkfydk@xkQ Øekd & 4
vk; d vk/kkj ij oxhZdj.k

Øekd	vk; ekfld	ifr'kr
1.	500 तक	40
2.	501 से 1000 तक	22
3.	1001 से 1500 तक	26
4.	1500 से 2000 तक	12

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 40 प्रतिशत भिक्षु 500 तक की ही आय मासिक अर्जित करते है, जबकि 1500 से 2000 तक की आय प्राप्त करने वालो का प्रतिशत 12 प्रतिशत है। उक्त आय नगद रूप में अर्जित है। दान के रूप में कपड़े, अनाज आदि अतिरिक्त देय है।

fHk{kkofRr mUewyu grq lq>ko %&

उपरोक्त अध्ययन ने शोधकर्ता के मन में उक्त समस्या के समाधान हेतु निम्न सुझाव सामने आये –

1. सरकार कड़े कानून बनाकर भिक्षावृत्ति को पूर्णतः प्रतिबंध करें।
2. सरकार/प्रशासन भिक्षुओं के बच्चों या भीख मांग रहे बच्चों को उचित शिक्षा दीक्षा प्रदान करें।
3. हर बड़े नगर में भिक्षु गृह, अनाथालय, पंगु आश्रम खोले जहां भिक्षुओं को भेजकर शिक्षित व रोजगार हेतु प्रशिक्षित करें।
4. इस हेतु सामाजिक संगठनों को सकारात्मक रूप से आगे आकर इनकी समस्या को सड़कों से लेकर सुधार गृह तक समझने व खत्म करने का प्रयास करें।
5. जनता के स्वयं में जागृति लाना चाहिये ताकि वे अपने घरों के द्वार में खड़े हुये भिक्षु को चन्द सिक्कों में न टरकाये अपितु स्वयं खड़े हो कर सकारात्मक पहल करें।

lUnHkZ&xzUFk %&

1. बघेल डॉ. किरण – सामाजिक विघटन एवं अपराध शास्त्र
2. दुबे सरला – सामाजिक व्याधिकारी और विघटन
3. तिवारी वी.के. – असामान्य मनोविज्ञान
4. दोषी एस.एल. – भारतीय समाज एवं परिवर्तन
5. मदन जी.आर. – सामाजिक विघटन